पाठ - 11

मीराबाई

मेवाड़ के जागीरदार रतन जी के घर एक साधु आकर ठहरे। उनके पास श्रीकृष्ण की एक सुंदर मूर्ति थी। रतन जी की पुत्री को वह मूर्ति बहुत पसंद आयी। उन्होंने साधु से मूर्ति माँगी, पर साधु ने मना कर दिया। वह नन्हीं सी बच्ची मूर्ति पाने के लिए हठकर बैठ ीऔर खाना-पीना छोड़ दिया। रात को साधु को स्वप्न दिखा कि यह मूर्ति बालिका को दे दो। आखिरकार विवश होकर साधु ने वह मूर्ति उस बच्ची को दे दी। मूर्ति को पाकर बच्ची बहुत प्रसन्न हुई और श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त बन गई। बड़ी होकर यही बच्ची श्रीकृष्ण की श्रेष्ठ उपासिका मीरा के रूप में प्रसिद्ध हुई।

मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई0 में राजस्थान में हुआ था । मीराबाई मेवाड़ के रतनसिंह राठौर की एक मात्र कन्या थीं। बचपन में ही मीराबाई की माता की मृत्यु हो गई। अतः मीरा का पालन-पोषण उनके दादा रावदूदा जी ने किया। रावदूदा जी वैष्णव भक्त थे। उनका अधिकांश समय भगवान की उपासना में बीतता था। मीरा पर अपने दादा के विचारों और क्रियाओं का प्रभाव पड़ा और यहीं से उनमें भक्ति भावना जाग्रत हुई।

मीराबाई का विवाह चित्तौड़ के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र महाराज कुँवर भोजराज से हुआ। दोनों सुखी जीवन बिताने लगे। वे सदा पति की सेवा में लगी रहती थीं। विवाह के

बाद भी उनकी उपासना में कमी नहीं आई। मीरा की भक्ति से इनके पति भी प्रसन्न रहते थे। दुर्भाग्यवश विवाह के केवल दस वर्ष बाद ही इनके पति का स्वर्गवास हो गया। इससे मीराबाई के जीवन में बड़ा परिवर्तन आया। पति की मृत्यु के बाद वे श्रीकृष्ण की पूजा और आराधना में और भी लीन रहने लगीं। इनकी भक्ति की चर्चा सुनकर दूर-दूर से साधु-संत इनके दर्शन के लिए आने लगे। भजन गाते हुए कभी-कभी ये भक्ति में भाव-विह्वल होकर नाचने लगतीं। संतों की मण्डली भी इनके साथ भक्ति-भाव में डूबकर नाचने लगती। मीराबाई के ससुराल वालों को यह बात पसंद नहीं थी। उनके पति के छोटे-भाई राणा विक्रम सिंह ने मीराबाई को तरह-तरह से कष्ट दिए परंतु परिवार द्वारा जितना अधिक विरोध किया गया मीराबाई का श्रीकृष्ण के प्रति लगाव उतना ही बढ़ता गया। मीराबाई के एक पद से ऐसा आभास होता है कि उन्हें जान से मारने के लिए विष भी दिया गया परंतु उन पर विष का कोई प्रभाव न हुआ।

‘‘विष का प्यालो राणा जी भेज्यो पीवत मीरा हाँसी रे।

मैं तो अपने नारायण की आप ही हो गई दासी रे ।।

मीराबाई बहुत निर्भीक महिला थीं। रूढ़िवादी राजपरिवार की वधू होने के बावजूद उन्होंने अपनी भक्ति और आदर्शों के लिए गलत परम्पराओं को तोड़ा। वे परिवार वालों के दुव्र्यवहार से दुखी होकर वृन्दावन और बाद में द्वारिका चली गईं। उन्होंने अपना शेष जीवन भक्तों की भाँति व्यतीत किया। उनके द्वारिका पहुँचने पर पूरी द्वारिका नगरी भक्ति-संगीत से सराबोर हो गई। जब मीराबाई श्रीकृष्ण के प्रेम में तल्लीन होकर अपनी रचनाएँ गातीं तो सम्पूर्ण नगरवासी उनके साथ मगन होकर गाने, नाचने लगते। मीरा रोज द्वारिकाधीश के मन्दिर के दर्शन करतीं। अपने गिरिधर गोपाल के प्रति मीरा का प्रेम व भक्ति दिनों दिन बढ़ती गई। अपने जीवन के अन्तिम समय तक वे द्वारिका में ही रहीं। यहीं उनका देहावसान हुआ।

‘‘हे री ! मैं तो प्रेम दिवानी, मेरो दरद न जानै कोय।।

सूली ऊपर सेज हमारी, सोवण किस विधि होय।

गगन मंडल पर सेज पिया की, किस विधि मिलना होय ।’’

मीराबाई में अभूतपूर्व काव्य क्षमता थी। उनकी रचनाओं में ब्रजभाषा, राजस्थानी, गुजराती भाषा के शब्द मिलते हैं। वस्तुतः उन्होंने काव्य रचना करने के उद्देश्य से यह पद

नहीं लिखे बल्कि अपने मन के भावों को सीधे सरल शब्दों में व्यक्त किया है। कहते हैं जो बात हृदय से निकलती है वह हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है। यही कारण था कि मीरा के पदों ने जन-जन को प्रभावित किया और उनके पद हर एक की जुबान पर चढ़ गए। उनके जीवनकाल में ही उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई थी। मीराबाई ने उस समय के किसी सम्प्रदाय से सम्बन्ध नहीं रखा बल्कि अपनी निजी साधना को ही प्रधानता दी। मीरा की उपासना 'माधुर्य भाव' की थी। उनका बहुत प्रसिद्ध पद है-

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ।।

उनकी कविताएँ भगवान कृष्ण के प्रति उनके अनन्य प्रेम का उद्गार हैं। मीराबाई ने उच्चकोटि की भक्ति साधना से केवल अपना ही कल्याण नहीं किया अपितु समाज, साहित्य और देश का भी कल्याण किया है। उन्होंने सम्पूर्ण समाज को गौरवान्वित किया। उनके पद हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. बचपन में मीराबाई पर उनके दादा जी का क्या प्रभाव पड़ा ?

2. मीराबाई के ससुराल वाले मीरा से क्यों अप्रसन्न थे ?

3. मीराबाई के पदों ने जन सामान्य को अधिक प्रभावित क्यों किया ?

4. सही कथन के सामने (√) का निशान तथा गलत कथन के सामने (X) का निशान लगाइए-

   अ. पति की मृत्यु के बाद मीराबाई का मन कृष्ण भक्ति में नहीं लगता था।

   ब. मीराबाई के ऊपर अपने दादा जी के संस्कारों का बहुत प्रभाव पड़ा।

स. राणा विक्रम सिंह ने मीरा को तरह-तरह के कष्ट दिये।

द. मीराबाई का देहावसान मेवाड़ में हुआ।

य. मीराबाई की रचनाओं में ब्रजभाषा, राजस्थानी, गुजराती भाषा के शब्द मिलते हैं ।

6. निम्नलिखित पदों को पूरा कीजिए-

क. विष का प्यालो .....

ख. मेरे तो गिरधर गोपाल .....

.....

7. सही मिलान कीजिए-

क. मीराबाई मेवाड़ के रतन सिंह राठौर की	क. राजस्थानी व गुजराती भाषा के शब्द मिलते हैं।
ख. मीराबाई की रचनाओं में ब्रजभाषा	ख. एक मात्र कन्या थीं।

8. अपनी पाठ्यपुस्तक अथवा अन्य पुस्तकों से मीरा के पद ढूँढ़कर लिखिए।